त्रियA पत्रिKA

हाइकु व लघु कविताओं की पत्रिका

बसंत संस्करण

About the Cover Art

Leather puppetry is a traditional art and one of the oldest art forms in India. Shadow puppets are flat figures cut out of leather treated to translucency. They are pressed against the screen and appear as a silhouette or color shadow to the viewers sitting on the other side of the screen. I had learnt this art in Bangalore and this is the digital print of the first piece of leather puppet I had created.

Teji Sethi

चमड़ा कठपुतली एक पारंपरिक कला है और भारत में सबसे पुरानी कला रूपों में से एक है। छाया कठपुतली चमड़े से काटी गयी सपाट आकृति होती हैं। यह स्क्रीन के दूसरी तरफ बैठे दर्शकों के लिए एक छाया चित्र या रंग छाया के रूप में दिखाई देतीं हैं। मैंने यह कला बैंगलोर में सीखी और यह मेरी पहली चमड़ा कठपुतली का डिजिटल प्रिंट है।

तेजी सेठी

तेजी सेठी

प्रबंध संपादक
संकल्पना, कवर व
आतंरिक डिज़ाइन

वैभव जोशी, प्रीती चाहर

सम्पादन (लघु कवितायें)
पत्रिका संशोधन

तेजी सेठी, प्रीती चाहर

सम्पादन व अनुवाद (हाइकु)

त्रिया पत्रिका - फरवरी । मार्च २०२२ - द्वितीय संस्करण

यह हाइकु, तनका व लघु कवितायेँ इंग्लिश लैंग्वेज जर्नल्स में प्रकाशित कृतियाँ हैं, जर्नल्स के नामों का लिप्यन्तरण किया गया है। टीम त्रिया ने अनुवाद करते वक़्त इस बात का विशेष ध्यान रखा है - मूल कविताओं के सार को बनाए रखा जा सके। अनुवाद व प्रकाशन में हुई त्रुटियों के लिए टीम त्रिया क्षमा प्रार्थी है। मूल कृतियों का कॉपीराइट कवि का है, त्रिया केवल इन्हें अनुवाद कर प्रकाशित करने का स्वामित्व रखती है।

कॉपीराइट त्रिया

कवि चौपाल

मीना बेदी
हिफसा अशरफ
अरविंदर कौर
नीना सिंह
कला रमेश
कामील फ्रीख़
मिलन राजकुमार
जी सेबेस्टियन
किंशुक गुप्ता
नेहा आर कृष्णा
डॉ. बिद्युत प्रभा गंतायत
रवि किरण

अनुवाद

विनीता अग्रवाल की कविता 'बट अ फ्लावर'
अनुवाद - तेजी सेठी

समीक्षा

द फारेस्ट आई नी: कला रमेश
समीक्षा संपादक: प्रीति आइसोला

दिल्ली हाट - चित्र साभार तेजी सेठी

हाइकु / तनका

मीना बेदी

अल्प ज्वार
हाथों में हाथ लिए
पुराने प्रेमी

त्सुरि-दोरो ६ नव/ दिसं २०२१

पुश्तैनी घर
धूल के गुबार
से स्वागत

कैट टेल्स अक्टूबर २०२१

लॉकडाउन
मेरे बेटे से लंबी
लॉन की घास

१३ यामदेरा बाशो मेमोरियल
म्यूजियम इंग्लिश लैंग्वेज हाइकु
कांटेस्ट कलेक्शन २०२१

मीना बेदी पेशे से एक डॉक्टर हैं जो दिल्ली में रहती हैं । वे बचपन से कविता लिख रही हैं लेकिन कुछ साल पहले उन्होंने जापानी विधा - हाइकु लिखना शुरू किया। । "दे, यू एंड मी" और "डांसिंग मूनलाइट" उनके प्रकाशित कविता संग्रह हैं। वह अपने पति, दो बच्चों और एक कुत्ते के साथ रहती हैं । उन्होंने कई हाइकु प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते हैं और जापान फेयर २०२१ में उनकी हाइकु का सम्मानजनक उल्लेख किया है ।

हिफसा अशरफ

गर्म सांझ
ज़मीन पे बिखरे
मोनाल के पर

हैजग्रो इशु १३६

पहली बर्फ
सिंहपर्णी शाख
हरी भरी

असाही हैकुइस्त नेटवर्क जनवरी २०२२

वाघा बॉर्डर
इन्द्रधनुष से जुड़े
स्वप्निल नेत्र

प्रथम प्रकाशन त्रिया पत्रिका

रावलपिंडी, पाकिस्तान में रहने वाली हिफसा अशरफ अंग्रेजी में आधुनिक जापानी शैली की माइक्रो पोएट्री लिखने के लिए अपने देश में अग्रणी हैं। उनका काम अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं, ब्लॉगों और एंथोलॉजी में व्यापक रूप से प्रकाशित हुआ है। एक संपादक के रूप में वह संयुक्त रूप से हाइकू कमेंट्री ब्लॉग लिखती हैं। वह पांच माइक्रो पोएट्री पुस्तकों की लेखिका हैं, जहां उन्हें अपने कविता संग्रह, "हर फेडिंग हिना टेटू" के लिए टचस्टोन प्रतिष्ठित पुस्तक पुरस्कार २०२० में और हाइकु सोसाइटी ऑफ अमेरिका मेरिट बुक अवार्ड २०२१ में विशेष उल्लेख मिला।

अरविंदर कौर

शरद चाँद
चांदी की पगडंडी
केशों में उसके

द मैनिची अक्टूबर १८, २०२१

हम क्या हैं
उग्र समुद्र के लिए
रेत के कण

फाइनलिस्ट इंटरनेशनल हाइकु कांटेस्ट
ऑफ़ द हाइकु सोसाइटी ऑफ़ कांस्ताना

महामारी वर्ष
रक्त रंजित चाँद
शायद ये
आँसू हैं उन लोगों के
जो खो गए कहीं गुमनाम

रिब्बन्स फॉल २०२१

अंग्रेजी साहित्य और मीडिया अध्ययन की पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, अरविंदर कौर प्रिंसिपल गवर्नमेंट कॉलेज डेरा बस्सी, पंजाब के रूप में सेवानिवृत्त हुईं हैं । उन्होंने लगभग एक दशक पहले माइक्रोपोएट्री लिखना आरम्भ किया व उनकी कविताएँ लगभग सभी प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं । उनका मानना है कि सीखना जीवन भर की एक प्रक्रिया है। उनकी माइक्रोपोएट्री की नवीनतम पुस्तक "फाअरफ़ाइस इन द रब्बल" है जो शीघ्र ही पाठको के समक्ष होगी!

नीना सिंह

पतझड़ की शाम
मेरे साथ केवल
मेरी परछाई

ऑटम मून हाइकु जर्नल ५.1 ऑटम /विंटर२०२१ - २२

धान का खेत
दिन ढले झुकाव
छाया चित्रों का

त्सुरि-दोरो #७ जनवरी/ फरवरी २०२२

चाहत भरी रात
एक झींगुर छेड़े
वन तरंग

प्रेसेंस # ७१, दिसंबर २०२१

नीना एक बैंकर व कवि हैं, उनकी हाइकु, सेनर्यु, तनका, चेरिता, हाइगा और रेंगा को नियमित रुप से पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता रहा है। उन्होंने कविता की दो पुस्तकें स्वयं प्रकाशित की हैं - "विस्पर्स ऑफ द सोल" - द जर्नी विद्दिन व "वन ब्रेथ पोएट्री" । वह वंचित बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए एक गैर-लाभकारी संस्था चलाती हैं।

कला रमेश

मुझे बादलों
के पार ले जाता
मेरु पुल

प्रथम स्थान - फिफ्थ एनुअल
पोएट्स चॉइस शिकी कुकई २००७

अल्प ज्वार
मन को भिगोती
मूक लहर

सिम्पली हाइकु विंटर २०११

तुम रौंदते हो
मेरी भावनाएं
हर बार
मैं चली आती हूँ असक्षम
होने का अहसास लिए

श्रेवे मेमोरियल लाइब्रेरी इलेक्ट्रॉनिक पोएट्री
नेटवर्क जुलाई १३ २०१०

पुषकार्ट पुरस्कार नामांकित, कला रमेश त्रिवेणी गुरुकुलम मेंटरशिप प्रोग्राम २०२१ व त्रिवेणी हाइकाई इंडिया की निदेशक हैं; वह नाद अनुनाद हाइकु एंथोलॉजी की मुख्य संपादक हैं। उनकी पुस्तक "बियॉन्ड द हीराइजन बियॉन्ड" को रवींद्रनाथ टैगोर लिटरेरी पुरुस्कार के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया था। हार्परकॉलिंस इंडिया द्वारा प्रकाशित, "द फारेस्ट आई नो" उनकी नवीनतम पुस्तक है। कला २०११ से सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में ६० घंटे का हाइकाई कोर्स पढ़ा रही हैं। हाइकु को रोजमर्रा के स्थानों पर लाने के लिए, उन्होंने कई परियोजनाओं की शुरुआत की और भारत में आठ हाइकाई उत्सवों का आयोजन किया।

कामील प्लीख

ऐसा क्यूँ है
बर्फ सफ़ेद और
बादल काले

द ७५ बाशो मेमोरियल इंग्लिश
हाइकु कांटेस्ट, होनोरेबल मेंशन

बहस के बाद
पंछियों व झींगुर
का राग

१३ यामदीरा बाशो मेनोरिअल
म्यूजियम इंग्लिश हाइकु
कांटेस्ट

पतझड़
शहर का बढ़ता
दायरा

फ्रॉगपोंड ४४.३

कामिल प्लीख - पोलैंड में पैदा हुए थे और वह वर्तमान में लुबेक, जर्मनी में रहते हैं । वह हाइकु और मुक्त छंद कविताएं लिखते हैं। उनके कार्यों को कई पोलिश, जर्मन और अंग्रेजी भाषा की इंटरनेट और मुद्रित पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया है जैसे फ्रॉगपोंड, असाही शिम्बुन, सोम्मेर्ग्रस , हेलिकोप्टर , स्त्रोना क्व्ज़्ज़ना, ट्रोबिअज्गी इत्यादि ।

मिलन राजकुमार

घर से दूर
मन लुभाते चित्र
बांस अंकुर के

मॉडर्न हाइकु ३२.२

सूखे खेत
बुवाई के गीत
पवन लुप्त

द हेरोंस नेस्ट वॉल्यूम २३
सितम्बर २०२१

तपती दोपहर
हलवाई व मक्खी
साथ ऊँघते

प्रेसेंस अंक #७०

मिलन राजकुमार एक प्रकाशित कवि और माध्यमिक विद्यालय में व्याख्याता हैं जो हाइकु लिखते हैं व अर्थशास्त्र पढ़ाते हैं । वह अपनी प्यारी पत्नी और दो बेटों के साथ म्यांमार की सीमा से लगे, उत्तर- पूर्वी भारत के एक कोने में स्थित इम्फाल, मणिपुर में रहते हैं। वह तिब्बती-बर्मन भाषा बोलते हैं जिसे 'मेइटिलॉन' या 'मणिपुरी' के रूप में जाना जाता है। लेखन बचपन से ही उनका जुनून है। आजकल वह हाइकाई कविताएं लिखने में तल्लीन हैं।

जो सेबेस्टियन

बिंदी उसकी
सुबह की धुँध में
जलता सूर्य

प्रथम प्रकाशन
त्रिया पत्रिका

ग्राम मंच
अभिनेता का तर्क
राम कौन

प्रथम प्रकाशन
त्रिया पत्रिका

जंगली राह
झाड़ियों के मध्य
बाउल गीत

प्रथम प्रकाशन
त्रिया पत्रिका

राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में स्नातकोत्तर व स्वर्ण पदक विजेता, जो सेबेस्टियन वर्तमान में प्रधान आयकर आयुक्त, बैंगलोर के रूप में कार्यरत हैं। जो ने हाइकु कविता का एक संग्रह लिखा है जिसका शीर्षक है 'माईरिअद म्युइंग्स '। वह बैंगलोर में , अपनी पत्नी, बेटी, बेटे और एक गोल्डन रिट्रीवर, स्कॉच के साथ रहते हैं । उनके काम को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया है, जिसमें शामिल हैं, द वेल्स हाइकु जर्नल, मेफ्लाई, क्रेट्रिक्स, कोल्ड मून जर्नल, प्रेसेंस , हाइकुनिवर्स, डायलन थॉमस एंथोलॉजी, द हाइकु फाउंडेशन, असाही शिनबम, म्यूज़ इंडिया, हाइकु एक्सप्रेसियन्स, द अकित्सु त्रैमासिक, असफल हाइकु , द बैमबू हट , पोएट्री पी, द सनफ्लॉवर कलेक्टिव, स्टारडस्ट हाइकु आदि। उनकी अन्य रुचियों में यात्रा, संगीत, जैविक खेती / बागवानी और मानसिक रूप से विकलांगों के लिए खेल का संचालन शामिल है। उन तक joeseb4321@yahoo.com पर संपर्क किया जा सकता है।

किंशुक गुप्ता

अकेलापन
अगरबत्ती का धुआँ
करती माँ

कैफे हाइकु

सर्द शाम
पंछी में बदलती
परछाई

अकित्सु क्वार्टरली विंटर
२०२०

हवा का बहाव
झेलती जौ की बाली
अंतिम सुनवाई

प्रथम प्रकाशन
त्रिया पत्रिका

किंशुक गुप्ता मेडिकल की पढ़ाई के साथ-साथ लेखन से कई वर्षों से जुड़े हुए हैं। अंग्रेज़ी की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं — द हिन्दू, द हिन्दू बिज़नस लाइन, द हिंदुस्तान टाइम्स, द क्विंट, द डेक्कन क्रॉनिकल, द टाइम्स ऑफ़ इंडिया — में उनकी कविताएँ, लेख और कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं । उनके द्वारा रचित एक हिंदी कहानी वागर्थ में भी प्रकाशित हुई है । उनकी कविताएँ अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत की गयी हैं । आजकल वे दिल्ली में रहते हैं । वे टाइम्स ऑफ़ इंडिया के लिए ब्लॉग लिखते हैं और पोशम्पा के साथ एक क्रिएटिव राइटिंग इंटर्न हैं । किंशुक जैगरी लिट् व मिथिला रिव्यु के लिए काव्य संपादक हैं।

नेहा आर कृष्णा

रात्रि का राग
चाँद उलझ गया
इस पेड़ में

हाइकु मास्टर्स वीक
फर्स्ट रुन्नर्स अप अक्टूबर २०१७

ग्रीष्म गीत
पेड़ की है डालियाँ
चांदनी भरी

अंडर द बाशो २०१९

गृह प्रवेश
प्रथम प्रवेश दूँ
मैं लहरों को

बोनस - समकालीन हाइकू का
जर्नल / १५ जुलाई, २०१९ /
अंक १७

इन हाइकु का अनुवाद स्वयं कवि द्वारा किया गया है

नेहा आर कृष्णा मुंबई से हैं, उनकी कविताएँ, अंडर द बाशो, प्रेसेंस , फ्रॉगपॉन्ड, हाइकु मास्टर्स - जापान, फेल्ड हाइकु , ह्यूमन / काइंड जर्नल, फ्रेमलेस स्काई, हाइकु फाउंडेशन, बोन्स जर्नल, प्रून जूस जर्नल, मूनबाथिंग जर्नल, वाइल्ड प्लम जर्नल, असाही हाइकु नेटवर्क - जापान, कंटेम्परेरी हैबुन ऑनलाइन और अन्य स्थानों पर प्रकाशित हुई है। वह नैरो रोड और ग्लास हाउस फेस्टिवल २०२० द्वारा वेइहिंग रेनड्रॉप्स हाइकु प्रतियोगिता की विजेता हैं।

डॉ. बिद्युत प्रभा गंतायत

घटती लहर
बहती लकड़ी पे
संवरती सीगल

एसुज - एच एन्लिध
हाइकु नवम्बर २०२१

शहरी घर
सूर्य मुखी का खेत
दीवार पर

द हाइकु फाउंडेशन
अक्टूबर २०२१

स्वर्ण धूल
बतख के पंख से
झड़ती ओस

हाइकु यूनिवर्स जून ३०

डॉ. बिद्युत प्रभा गंतायत रसायन विज्ञान की प्रोफेसर, लेखक, अनुवादक और एक हाइकु कवि हैं। उन्होंने २०१४ में फेसबुक से जुड़ने के बाद कविता के इस जापानी रूप को अपनाया है। उन्होंने कविता , कहानी और अनुवाद पर लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित की हैं। बच्चों के लिए लघु कहानी और विश्व साहित्य का अनुवाद भी किया है। हाल ही में वह हाइकु की अपनी किताब पर काम कर रही है। वह भुवनेश्वर, ओडिशा में अपने परिवार के साथ रहती हैं।

रवि किरण

संध्या बेला
एक अधूरा गीत
चौराहे पर

फेल्ड हाइकु #७०, सितम्बर २०२१

पर्वत के
मध्य गुमनाम
सुगंध

द हाइकु फाउंडेशन
अगस्त २०२१

लहराते केश
मेरा लालायित मन
पवन बनूँ

कैट टेल्स विंटर २०२१

रवि पेशे से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर प्रोफेशनल हैं। सब कुछ जापानी - बोनसाई से लेकर जापानी रसोई के साधन उन्हें अकर्षित करते हैं। हाइकु - रवि के लिए एक यात्रा है, जिसे वह अपने पेशेवर दिनचर्या के बीच में तनाव से मुक्ति का एक साधन मा नते हैं। रवि की हाइकु कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

त्रिया उल्लेख

महामारी वर्ष
रक्त रंजित चाँद
शायद ये
आँसू हैं उन लोगों के
जो खो गए कहीं गुमनाम

अरविंदर कौर

रिब्बन्स फॉल २०२१

अरविंदर की यह तनका महामारी काल में हुई मानवता की साझी त्रासदी को बड़े मार्मिक रूप से उजागर करती है। मेरा मानना है कि दुःख, एक सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है। मैंने कहीं पढ़ा था कि कविताएँ हमें साझा भाग्य की इस भावना से जोड़ती हैं, वे हम में सहानुभूति के अनुभव को जागृत कर हमें अलगाव के अकेलेपन से दूर रखती हैं । रक्त रंजित चाँद की छवि - पाठकों के मन पर शोक व असहायता की मिश्रित छाप छोड़ती है । गत दो वर्षों में हम सभी ने अपने प्रियजनों को खोया है । खोने के इस अनंत अहसास को अपनी तनका के द्वारा अरविंदर ने बड़ी सहजता से शब्दों में ढाला है।

- तेजी सेठी

दिल्ली हाट - चित्र साभार तेजी सेठी

कविता अनुवाद

विनीता अग्रवाल

विनिता अग्रवाल की कविता 'बट अ फ्लावर' का हिंदी अनुवाद

लेकिन एक फूल

मुझे पच्चीस साल बाद मिलता है
वेबस्टर शब्दकोश के पन्नों के बीच दबा - एक फूल

यह अब एक पिचकी हुई मकड़ी की तरह दिखता है
बिंदु जैसा शरीर, पैरों जैसे दिखते - पतले पुंकेसर
एक - आयामी और कागजी
एक रिश्ते के अंत की तरह।

सुर्ख पीले रंग से
जंग जैसे भूरे रंग का हो गया
दर्द से फड़फड़ाता है, हल्के से स्पर्श पर
टूटे हुए दिल की तरह

शब्दकोश के सभी अच्छे शब्द भी
न समेट सके उसे
वह धंस गया सिलवटों के क्लौस्ट्रफ़ोबिया में
अब वह वनस्पति नहीं, जीव जैसा दिखता है

वनस्पति विज्ञान नहीं प्राणी विज्ञान
उस प्रेम की तरह जो पोषित नहीं होता

अब सोचती हूँ
कोई भी इसे लैपल पर नहीं पहनेगा
गुलदस्ते में नहीं सजाएगा
इससे गालों को नहीं सहलाएगा
या डूबेगा इसकी सुगंध में
इसने अपना अस्तित्व खो दिया है
जिस तरह चीजें खोती हैं, जब समय पर छोड़ दी जाएं

काश यह एक फूल ही रह जाता
एक मृत फूल, लेकिन एक फूल।

विनीता अग्रवाल कविता की चार पुस्तकों की लेखिका हैं, जिनमें नवीनतम हैं - "टू फुल मून्स"। वह उसावा लिटरेरी मैग के साथ कविता संपादक हैं। उन्होंने जलवायु परिवर्तन पर एक एंथोलॉजी का संपादन किया है जिसका शीर्षक है - "ओपन योर आईज" और वह "द ईयरबुक ऑफ़ इंडियन पोएट्सरी इन इंग्लिश २०२१" की सह संपादक हैं । उन्हें २०१८ में साहित्यिक उत्कृष्टता के लिए टैगोर साहित्यिक पुरस्कार और २०१५ में गायत्री गा मार्श पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

जैन मंदिर, अहमदाबाद - चित्र साभार तेजी सेठी

समीक्षा - 'द फारेस्ट आई नो'- कला रमेश

द फारेस्ट आई नो: कला रमेश
समीक्षा संपादक: प्रीति आइसोला

कला रमेश की किताब, द फारेस्ट आई नो की समीक्षा के लिए पढ़ते समय मेरा मन विस्मय से भर गया । गत १५ वर्षों में प्रकाशित कविताओं-तनका, तनका सूत्र, तनका दोहा, चेरिता, हाइबुन और तनका गद्य की शैली वाले इस संग्रह की समीक्षा करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है ।

प्रत्येक कविता में हमें एक कवि-शिल्पकार के दक्ष स्पर्श की झलक मिलती है जो सरल भाषा में गहरे विचारों को संवेदनशीलता से व्यक्त करने में सक्षम है और यह उनकी इस तनका में पढ़ने को मिलता है:

हाथों में
एक दक्ष शिल्पकार की
कद्दू का खोल
और तार बन जाते हैं
एक गूंजती सितार

(पृष्ठ ११७)

कला के हाथों में शब्द, भावना, धारणाएं, प्रतिबिंब, छवियां, रूप और ताल एक सुन्दर तनका का रूप धारण करते हैं। उनकी पुस्तक में कई विषयों को शामिल किया गया है : जीवन का अर्थ, समानता और असमानता, रिश्तों में दर्द, अपेक्षाएं और निराशा, मोहभंग, एक शहरी महिला का जीवन, गांव की महिलाएं और उनके जीवन की कहानियाँ, बचपन, मातृत्व, बुढ़ापे और उसके साथ का अकेलापन और अन्य चुनौतियों की स्थिति उनकी कविताओं के मुख्य विषय हैं ।

इस किताब का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है पहचान, 'मैं कौन हूँ' (पुस्तक में उनके तनका सूत्र का शीर्षक) है, और यह कला की कविताओं को आध्यात्मिक गहराई और मार्मिक सौंदर्य प्रदान करता है । यह पुस्तक 'कुछ नहीं' होने की भावना से लेकर 'सकारात्मक परिवर्तन' और 'एक नई शुरुआत करने की आशा' का ताना बाना है ।

कला की कुछ कविताएं भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में लिखीं गई हैं । उदाहरण के लिए - ओम, भगवान यम, पवित्र तुलसी, योग, राग, वीणा, एकादशी, रंगपंचमी। यह १३०० वर्ष पुराने काव्य रूप - तनका के दायरे को समृद्ध और गहरा करता है ।

संवेदनशील और जटिल विषयों को कला ने बड़ी सहजता से अपनी तनका के माध्यम से सामने रखा है । प्यार, लालसा, अकेलापन, शारीरिक और भावनात्मक दर्द को तनका, तनका दोहा के सीमित और शैलीबद्ध क्षेत्र के भीतर लिखना आसान नहीं है ।

मृत्यु के विषय पर एक बहुत ही कुशलता से लिखी, उदास और अविस्मरणीय तनका है:

एक ज़र्द पत्ते
का अपनी ही छाया पर
ठहराव
हम देते हैं स्वीकृति
दादी का ऑक्सीजन मास्क हटाने की

पृष्ठ ३९

इस समीक्षा के माध्यम से मैं एक भावी पाठक के लिए कला की पुस्तक की एक बहुत ही सिमित झलक की पेशकश कर सकती हूँ ।

जैसे ही मैंने इस वन में भ्रमण किया मुझे एहसास हुआ कि प्रत्येक कविता अपने अद्वितीय तने, शाखाओं, जड़ों, पत्तियों और फूलों के साथ एक अनूठा पेड़ है । प्रत्येक की अपना विलक्षण मनोदशा और आभा है। इससे परिचित होने के लिए केवल एक बार पढना पर्याप्त नहीं है ।

प्रीति आइसोला एक लेखक हैं, उन्होंने कई संग्रह प्रकाशित किये हैं, एक उपन्यास, सी पेरिस फॉर मी , बियॉन्ड गोपुराम्स, एक आध्यात्मिक यात्रा , और कविता के दो संग्रह, लेटर्स टू माया , जो एक रचनात्मक गैर काल्पनिक शैली में लिखी गयी है, उनकी नवीनतम पुस्तक है। २०२० में उन्हें काला रमेश ने हाइकाई साहित्य से मिलवाया और इसके लिए वह अपने गुरु की बहुत आभारी हैं । उन्हें अपने गर्मदिल कवि मित्रों के समुदाय में रहना पसंद है इससे उन्हें दिन प्रतिदिन सीखने का अवसर मिलता है व उनकी ज़िन्दगी में नवीनता बनी रहती है ।

त्रिया पत्रिका - फरवरी । मार्च २०२२ - द्वितीय संस्करण